215hi19

पाठ्यक्रम VI

अधिकतम अंक	अध्ययन के घंटे
12	25

व्यापार में जीविकोपार्जन के अवसर

हममें से प्रत्येक को किसी न किसी स्तर पर अपना जीवनयापन करने के लिये जीविकोपार्जन का साधन चुनना पड़ता है। व्यापार का क्षेत्र स्वरोजगार तथा सवेतन रोजगार के अनगिनत अवसर प्रदान करता है। आज स्व: रोजगार, बेरोजगारी दूर करने का एक अति उत्तम विकल्प है। जिससे हमारे देश की उन्नति भी होती है। स्वयं के लिये कार्य करना अपने आप में एक चुनौती तथा प्रसन्नता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए यह पाठ तैयार किया गया है, जिससे कि अध्ययनकर्ता विभिन्न जीविकोपार्जन के साधनों के साथ-साथ कार्य के संसार में प्रवेश कर सके अथवा कार्यों के बारे में जान सके।

पाठ 19 : जीविका का चयन

पाठ 20 : उद्यमिता

19

जीविका का चयन

आप में से कुछ तो किसी फर्म में नौकरी करने की सोच रहे होंगे और कुछ अपना कोई व्यवसाय करना चाहते होंगे। जीविका का अर्थ है, व्यवसाय, जिसे हम अपने जीविकोपार्जन के लिये करते हैं। चुनने का अर्थ है सही निर्णय लेना।

आप क्या बनना चाहते हैं, इस सम्बन्ध में आपके मस्तिष्क में कुछ न कुछ तो रेडियो सुनकर, टेलीविजन देखकर आया होगा। समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में भी नौकरी के लिए विज्ञापन आते हैं, जिन्हें आपने पढ़ा होगा, आपको क्या बनना चाहिए, इस सम्बन्ध में आपके माता-पिता और सगे सम्बन्धी भी परामर्श देते होंगे। भविष्य में आप क्या करेंगे इसके लिए अपनी योग्यताओं एवं रूचि का स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। इन सबके अतिरिक्त यह भी जानना आवश्यक हो जाता है कि रोजगार के कौन से अवसर उपलब्ध हैं। विभिन्न रोजगारों के लिए क्या-क्या योग्यताएं होनी चाहिए।

इस अध्याय में आप जीविका चयन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेंगे। ये पहलू हैं- अवधारणा, महत्व, अवसर, योग्यता आदि। यही आपके रोजगार संबंधी भविष्य का निर्णय लेने में सहायक होंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- जीविका की अवधारणा को स्पष्ट कर पाएंगे;
- जीवन वृत्ति के चुनाव के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यवसाय में जीविका के विभिन्न अवसरों की पहचान कर सकेंगे;
- स्वरोजगार के महत्व को समझ सकेंगे;
- स्वरोजगार तथा सवेतन रोजगार में अंतर बता सकेंगे;
- विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय के लिये अपने सामर्थ्य, रूचि तथा योग्यताओं का वर्णन कर सकेंगे; और
- अपनी योग्यता, रूचि एवं प्रवृति को ध्यान में रखकर व्यवसाय में जीविका के अवसरों की पहचान कर सकेंगे।

19.1 जीविका की अवधारणा

जीविका का शाब्दिक अर्थ है : एक ऐसा व्यवसाय, जिसके द्वारा जीवन में आगे बढ़ने एवं उन्नति के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। इससे अभिप्राय मात्र एक रोजगार/जीविका का चयन नहीं है। इसका तात्पर्य उन विभिन्न पदों से हैं, जो क्रियाशील जीवन में कोई व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। व्यापक अर्थों में जीविका किसी व्यक्ति की जीवन संरचना का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उदाहरण के लिए आपको कार्यालय सहायक का पद मिलता है। आगे चलकर आप कार्यालय अधीक्षक बन सकते हैं और हो सकता है कि कार्यालय प्रबन्धक के पद तक पहुंच जाएं। व्यवसाय का अर्थ है किसी व्यक्ति द्वारा जीवन में उन्नति करना विशेषतया उस व्यक्ति से सम्बंधित व्यवसाय के सम्बंध में। व्यवसाय सामान्यत: एक व्यक्ति द्वारा लम्बे समय तक किया जाने वाला कार्य है, जो सेवा में रहते हुए अपनी स्थिति बनाये हुए अपने व्यवसाय/जीविकोपार्जन के रूप में करता है।

आज जल्दी-जल्दी व्यवसाय बदलने का चलन बढ़ रहा है। उदाहरण के लिये एक वकील अपने व्यक्तिगत व्यवासय में कई अलग-अलग फर्मो का अलग-अलग कानूनी व्यवसाय करता है।

अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग व्यवाय जो आप करते हैं। उसे आपके व्यवसाय का रास्ता कह सकते है और इससे आपके दिन प्रतिदिन की दिनचर्या पर भी प्रभाव पड़ता है। व्यवसाय से ही किसी की स्थिती का पता भी चलता है कि जो उस व्यक्ति ने अपनी योग्यता तथा क्षमता विकसित की है।

19.2 जीविका के चयन का महत्व

जीविका का चुनाव जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अपनी योग्यता के अनुसार एक विशेष व्यवसाय का चुनाव जो हम अपने भविष्य के लिये करते हैं, उसका आज के प्रतियोगी जीवन में बहुत महत्व है। आप जिस वृत्ति का चुनाव करते हैं वही आपके भविष्य की आधारशिला है। पहले, लोग अपनी शिक्षा पूरी करते थे, फिर अपनी जीविका का निर्णय करते थे। लेकिन आज की पीढ़ी अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी करने से पहले ही अपने भविष्य निर्माण की दिशा में कदम बढ़ा लेती है। जीविका का चुनाव किसी व्यक्ति की जीवन शैली को अन्य किसी घटना की तुलना में सबसे अधिक प्रभावित करता है। कार्य हमारे जीवन के कई रूपों को प्रभावित करते हैं। हमारे जीवन में मूल्यों, दृष्टिकोण एवं हमारी प्रवृत्तियों को जीवन की ओर प्रभावित करता है। इस भीषण प्रतियोगिता की दुनिया में प्रारम्भ में ही जीविका सम्बन्धी सही चुनाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिए एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जो किसी व्यक्ति को विभिन्न जीवन वृत्तियों से अवगत कराए। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को अपनी उन योग्यताओं एवं क्षमताओं का पता लग जाता है, जो जीवन सम्बन्धी निर्णय का एक महत्वपूर्ण अंग है।

चुनौती प्रतियोगिता आज के समाज के मुख्य अंग है, इसलिए जीविका की योजना बनाना ही केवल यह बताता है कि हमें जीवन में क्या करना है और हम क्या करना चाहते है?

ना कि बार-बार और जल्दी-जल्दी अपने व्यवसाय अथवा कार्य को उद्देश्यहीन तरीके से बदलना।

हम वर्तमान में क्या है! इसका पता हमें जीविका चुनने से ही चलता है। हम सभी की कुछ आकांक्षाएं होती है और हम सभी भविष्य में स्थिरता चाहते हैं। इसलिए जीविका का चयन एक कुंजी का कार्य करता है। कोई व्यक्ति अपने बारे में उचित विश्लेषण करके उचित निर्णय ले सकता है।

जीविका का चयन मुख्यत: हाई स्कूल अथवा इन्टर की पढ़ाई पूरी करने पर प्रारम्भ होता है। उसके पश्चात स्नातक की पढ़ाई व्यक्ति को अच्छी तथा सुलभ जीविका चुनने में सहायक होती है। जीविका का चुनाव हमें भविष्य को सुचारू बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हे। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति बैंकर बनना चाहता है तो वह ''इण्डियन कास्ट एंड वर्क एकाउन्टेंट'' चार्टेड एकाउण्टेन्ट, मास्टर आफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (वित्त) का कोर्स करना चाहेगा। जीविका चयन एक ऐसा कार्य है जो कि हमें जीवन परयंत अध्ययन करने तथा उन्नति करने के लिये प्रेरित करता रहता है और हम जैसा करते है हमारी रूचि और आवश्यकताएं हमें बदलाव की ओर अग्रसर करती रहती है।

पाठगत प्रश्न 19.1

निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सत्य है और कौन सा असत्य :

i. जीविका अपने कार्य कालिक जीवन में जिस कार्य में एक व्यक्ति लगा होता है, उससे जुड़े विभिन्न पदों का नाम है।
ii. सही जीविका का चयन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की आवश्यक क्रिया है।
iii. आज की पीढ़ी के समक्ष जीविका के अत्यंत कम विकल्प हैं।
iv. विभिन्न जीविकाओं का ज्ञान सही वृत्ति के चुनाव में सहायक होता है।
v. प्रारम्भिक स्तर पर जीविका चयन की आवश्यकता नहीं होती है।

19.3 व्यवसाय में जीविका के अवसर

जब कोई व्यक्ति किसी व्यवसाय में लगा होता है तो हम कहते हैं कि वह रोजगार में है। हर व्यक्ति का व्यवसाय किसी न किसी आर्थिक क्रिया से जुड़ा है। हर व्यक्ति अपने भविष्य के निर्माण के लिए किसी न किसी रोजगार में लगना चाहता है अर्थात् अपनी आजीविका कमाने के लिए किसी न किसी आर्थिक क्रिया में लग जाता है।

जीविका का चुनाव करने के लिए नीचे दिए गए विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है :

i. नौकरी
ii. स्वरोजगार

नौकरी का अर्थ है किसी दूसरे की मजदूरी अथवा वेतन के बदले में कार्य करना। यदि किसी को कार्यालय सहायक के पद पर नियुक्त किया जाता है तो वह उस कार्य को करेगा जो

उसका पर्यवेक्षक उसे सौंपता है। अपने कार्य के बदले में प्रतिमास उसे वेतन मिलेगा। इस प्रकार का रोजगार रोजगारदाता एवं कर्मचारी के बीच अनुबंध पर आधारित होता है। कर्मचारी अपने मालिक के लिए कार्य करता है। वह उस कार्य को करता है जो उसका मालिक उसे करने के लिए देता है। इसके बदले में उसे उसका प्रतिफल मिलता है। कार्यकाल की अवधि में वह मालिक की देख-रेख और नियंत्रण में कार्य करता है। दूसरी ओर स्वरोजगार का अर्थ है अपनी जीविका कमाने के लिए स्वयं किसी आर्थिक क्रिया को करना। आइए, पहले नौकरी के विभिन्न अवसरों के बारे में संक्षेप में जानें।

19.4 नौकरी

सवेतन व्यवसाय अथवा सवेतन नौकरी के अवसर सरकारी कार्यालयों में पाये जाते हैं। सरकारी विभागों में रेलवे, बैंक, व्यापारिक कम्पनियां, स्कूल एवं अस्पतालों में विभिन्न प्रकार का कार्य होता है। इसी प्रकार से औद्योगिक इकाइयों एवं ट्रांसपोर्ट कम्पनियों के कार्यों की प्रकृति में अंतर होता है। इसलिए इनमें कार्यरत तकनीकी कर्मचारियों के कार्य में भी भिन्नता होती है।

नौकरी

जिन लोगों ने माध्यमिक परीक्षा पास की है उन लोगों के लिए लिपिक अथवा विद्यालयों में प्रयोगशाला सहायक के पद पर नियुक्ति के अवसर होते हैं, क्योंकि इन पदों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता माध्यमिक कक्षा उत्तीर्ण है। वैसे इनके लिए आई.टी.आई., पॉलीटैक्निक, राज्य सचिव एवं वाणिज्यिक संस्थानों में प्रशिक्षण की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं। जो व्यक्ति तकनीकी अथवा कार्यालय सचिवालयों के पाठ्यक्रम में उतीर्ण हो जाता है उसे किसी कार्यशाला में तकनीकी कर्मचारी अथवा कार्यालय सहायक अथवा लेखालिपिक के पद पर नियुक्ति मिल सकती है। यदि वह कम्प्यूटर प्रचालन में निपुण है तो उसे कम्प्यूटर प्रचालक के रूप में नियुक्ति मिल सकती है।

19.5 स्वरोजगार

आप यह सीख चुके हैं कि नौकरी के रूप में आप अपनी जीविका का चुनाव किस प्रकार करेंगे। जब आप कोई रोजगार अपनाते हैं तो आप वह कार्य करते हैं जो आपका रोजगारदाता आपको सौंपता है तथा बदले में आपको मजदूरी अथवा वेतन के रूप में एक निश्चित राशि प्राप्त होती है। लेकिन कोई काम/नौकरी के स्थान पर अपना कोई कार्य कर सकते हैं तथा अपनी आजीविका कमा सकते हैं।

आप एक दवाइयों की दुकान चला सकते हैं या फिर एक दर्जी का काम कर सकते हैं।

यदि एक व्यक्ति कोई आर्थिक क्रिया करता है तथा स्वयं ही इसका प्रबंधन करता है तो इसे स्वरोजगार कहते हैं। हर इलाके में आप छोटे-छोटे स्टोर, मरम्मत करने वाली दुकानें

अथवा सेवा प्रदान करने वाली इकाइयां देखते हैं। इन प्रतिष्ठानों का एक ही व्यक्ति स्वामी होता है तथा वही उनका प्रबंधन करता है। कभी-कभी एक या दो व्यक्तियों को वह अपने सहायक के रूप में रख लेता है। किराना भंडार, स्टेशनरी की दुकान, किताब की दुकान, दवा घर, दर्जी की दुकान, नाई की दुकान, टेलीफोन बूथ, ब्यूटी पार्लर, बिजली, साइकिल आदि की मरम्मत की दुकानें स्वरोजगार आधारित क्रियाओं के उदाहरण हैं। इन भंडारों अथवा दुकानों के स्वामी प्रबन्धक क्रय-विक्रय क्रियाओं अथवा सेवा कार्यों से आय अर्जित करते हैं जो उनकी जीविका का साधन है। यदि उनकी आय व्यय से कम होती है तो उन्हें हानि होती है, जिसे उन्हें ही वहन करना होता है।

स्वरोजगार

पाठगत प्रश्न 19.2

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. लोगों का व्यवसाय सदा _____ क्रियाओं से जुड़ा होता है।

ii. सरकारी विभागों में निम्न स्तर पर लोगों को अधिकांशत: _____ कार्यों पर रखा जाता है।

iii. एक स्टोरकीपर के कार्य के लिए एक व्यक्ति _____ कार्य में निपुण होना चाहिए।

iv. अधिकांश लिपिक पदों के लिए _____ के परिचालन की योग्यता आवश्यक है।

v. टेलीफोन परिचालक की आवश्यक योग्यता धारा प्रवाह _____ है।

vi. _____ का अर्थ है किसी दूसरे की मजदूरी अथवा वेतन के लिए कार्य करना।

vii. यदि एक व्यक्ति आर्थिक क्रिया करता है तथा स्वयं ही इसका प्रबंध करता है तो इसे _____ कहते हैं।

viii. तकनीकी अथवा कार्यालय सचिवालयों के पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद एक व्यक्ति _____ के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकता है।

19.6 स्वरोजगार तथा सवेतन रोजगार में अंतर

आप स्वरोजगार और नौकरी के विषय में पढ़ चुके हैं। आईए, इन दोनों में अंतर को देखें:

i. नौकरी या सवेतन रोजगार में व्यक्ति कर्मचारी होता है, जबकि स्वरोजगार में वह स्वयं नियोक्ता की तरह होता है।

ii. नौकरी में आमदनी नियोक्ता पर निर्भर करती है कि वह कितना वेतन देता है, जबकि स्वरोजगार में उस व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करती है जो स्वरोजगार में लगा हुआ है।

iii. नौकरी में व्यक्ति दूसरों के लाभ के लिए कार्य करता है जबकि स्वरोजगार में व्यक्ति अपने ही लाभ के लिए कार्य करता है।

iv. नौकरी में आय सीमित होती है, जो पहले से ही नियोक्ता द्वारा तय कर ली जाती है। जबकि स्वरोजगार में स्वरोजगार में लगे हुए व्यक्ति की लगन व योग्यता पर निर्भर करती है।

v. नौकरी में कर्मचारी को 'कार्य विशेष' नियोक्ता द्वारा दिया जाता है, जबकि स्वरोजगार में वह अपनी आवश्यकतानुसार कार्य चुनता है।

vi. स्वरोजगार में जोखिम सदैव बना रहता है तथा आप घटती रहती है नौकरी में कोई जोखिम नहीं है जब तक कि एक कर्मचारी कार्य करता है।

19.7 स्वरोजगार के क्षेत्र

स्वरोजगार की विशेषताओं का अध्ययन करने के पश्चात आप उन क्षेत्रों के सम्बन्ध में जानना चाहेंगे जिनमें स्वरोजगार की संभावनाएं हैं। जब आप स्वरोजगार की योजना बनाएं तो आप इसके लिए निम्नलिखित अवसरों को ध्यान में रख सकते हैं :

i) **छोटे पैमाने का फुटकर व्यापार :** एक अकेला स्वामी छोटे व्यावसायिक इकाइयों को एक या दो सहायकों के सहयोग से सरलता से प्रारम्भ कर सकता है तथा लाभ कमा सकता है।

ii) **व्यक्तिगत निपुणता के आधार पर सेवाएं प्रदान करना :** जो लोग अपनी विशिष्ट निपुणता के आधार पर ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते हैं वह भी स्वरोजगार में सम्मिलित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए साईकिल, स्कूटर, घड़ियों की मरम्मत, सिलाई, बाल संवारना आदि ऐसी सेवाएं है जो ग्राहक को व्यक्तिगत रूप से प्रदान की जाती है।

iii) **पेशेगत योग्यताओं पर आधारित व्यवसाय :** जिन कार्यों के लिए पेशे सम्बन्धी प्रशिक्षण एवं अनुभव की आवश्यकता होती है वह भी स्वरोजगार के अंतर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए पेशे में कार्यरत डॉक्टर, वकील, चाटर्ड एकाउन्टैंट, फार्मेसिस्ट, आरकीटैक्ट आदि भी अपने विशिष्ट प्रशिक्षण एवं निपुणता के आधार पर स्वरोजगार की श्रेणी में आते हैं इनके छोटे प्रतिष्ठान होते हैं जैसे क्लीनिक, दफ्तर का स्थान, चैम्बर

आदि तथा यह एक या दो सहायकों की सहायता से अपने ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते हैं।

iv) **छोटे पैमाने की कृषि :** कृषि के छोटे पैमाने के कार्य जैसे डेरी, मुर्गीपालन, बागबानी, रेशम उत्पादन आदि में स्वरोजगार सम्भव है।

v) **ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग :** चर्खा कातना, बुनना, हाथ से बुनना, कपड़ों की सिलाई भी स्वरोजगार है। यह पारम्परिक विरासत में मिली निपुणताएं हैं।

vi) **कला एवं काश्तकारी/शिल्प :** जो लोग किसी कला अथवा शिल्प में प्रशिक्षण प्राप्त हैं वह भी स्व रोजगार ही है। इनके व्यवसाय हैं - सुनार, लोहार, बढ़ई आदि।

19.8 सवेतन की वरीयता में स्वरोजगार

स्वरोजगार, अक्सर सवेतन से निम्न कारणों से बेहतर माना जाता है :

i. स्वरोजगार अपनी योग्ता को अपने फायदे के लिए स्वरोजगार से आप अपने समय व योग्यता का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

ii. स्वरोजगार पूँजी के अत्याधिक संसाधनों तथा अन्य संसाधनों के बिना भी संभव है। उदाहरण के लिए एक मरम्मत की दुकान कम पूँजी से शुरू की जा सकती है।

iii. स्वरोजगार में एक व्यक्ति 'कार्य पर' रह कर कई चीजे सीखता है क्योंकि उसे अपने व्यवसाय से सम्बन्धित अपने फायदे के लिए सभी निर्णय स्वयं लेने होते हैं।

पाठगत प्रश्न 19.3

निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य हैं और कौन से असत्य :

i. स्वरोजगार का अर्थ है स्वयं किसी आर्थिक क्रिया में संलग्न होना।
ii. नौकरी में आय की कोई सीमा नहीं है।
iii. जब एक व्यक्ति मूल्य के बदले व्यक्तिगत सेवा प्रदान करता है तो उसके लिए भी कुछ पूंजी की आवश्यकता होती है।
iv. व्यवसाय में, स्वरोजगार में हानि, का जोखिम रहता है जिसे स्वामी वहन करते हैं।
v. एक सुनार स्वरोजगार नहीं हो सकता क्योंकि वह एक आभूषण विक्रेता के अधीन काम करता है।

19.9 स्वरोजगार में सफलता के लिए आवश्यक गुण

विभिन्न क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसरों के अध्ययन करने के पश्चात् आप समझ गए होंगे

कि नौकरी के स्थान पर स्वरोजगार को जीवन वृत्ति के लिए अधिक पसन्द करते हैं। लेकिन स्वरोजगार को तभी चुनना चाहिए जब आप इसमें सफल होने की योग्यता रखते हो। आइए, स्वरोजगार में सफलता के लिए आवश्यक गुणों के बारे में जानें :

i) **बौद्धिक योग्यताएं :** आप यदि स्वरोजगार में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आप में स्वरोजगार के सर्वाधिक अनुकूल अवसरों की पहचान करने की योग्यता होनी आवश्यक है। साथ ही व्यवसाय परिचालन के सम्बन्ध में निर्णय लेने तथा तरह-तरह के ग्राहकों को संतुष्ट करने की योग्यता का होना भी महत्व रखता है। फिर समस्याओं के पूर्वानुमान एवं जोखिम उठाने की क्षमता की भी आवश्यकता है।

ii) **सतर्कता तथा दूर-दृष्टि :** स्वरोजगार में लगे व्यक्ति को बाजार में हो रहे परिवर्तनों के प्रति सचेत और सतर्क होना चाहिए जिससे कि वह उनके अनुसार अपने व्यवसाय के कार्यों का समायोजन कर सके। उसमें दूर-दृष्टि का भी होना आवश्यक है जिससे कि वह संभावित परिवर्तनों का अनुमान लगा सके, अवसरों का लाभ उठा सके तथा भविष्य में यदि किसी प्रकार के खतरे की संभावना है तो उनका सामना कर सकें।

iii) **आत्मविश्वास :** स्वरोजगार में मालिक को ही सभी निर्णय लेने आवश्यक होते हैं क्योंकि उसे समस्याओं को हल करना होता है तथा आपूर्तिकर्ता, लेनदार ग्राहक तथा सरकारी अधिकारियों का समाना करना होता है।

iv) **व्यवसाय का ज्ञान :** जो भी व्यक्ति स्वरोजगार में लगा है उसको व्यवसाय का पूरा ज्ञान होना चाहिए। इसमें व्यवसाय को चलाने का तकनीकी ज्ञान एवं कौशल भी सम्मिलित है।

v) **सम्बन्धित कानूनों का ज्ञान :** जो स्वरोजगार में लगा है, यह आवश्यक नहीं कि वह कानून का विशेषज्ञ हो लेकिन उसे जहां उसका व्यवाय चल रहा है वहां के व्यवसाय सम्बन्धी एवं सेवाओं से सम्बन्धित कानूनों का काम चलाऊ ज्ञान होना आवश्यक है। इनमें ट्रेड एंड ऐस्टेबलिशमेंट एक्ट, विक्रय कर एवं उत्पादन कर से संबंधित कानून एवं प्रदूषण नियंत्रण आदि से संबंधित नियम है।

vi) **लेखा कार्य का ज्ञान :** व्यवसाय करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सभी लेन देनों का पूरा ब्यौरा रखना होता है जिससे कि वह आवधिक अन्तराल का लाभ हानि निर्धारित कर सके, भुगतान तिथि को अपने लेनदारों का भुगतान कर सके, ग्राहकों से पैसा वसूल कर सके तथा करों का भुगतान कर सके। इस सबके लिए उसे लेखा कार्य का आवश्यक ज्ञान होना जरूरी है।

vii) **अन्य व्यक्तिगत गुण :** स्वरोजगार में लगे व्यक्ति में ईमानदारी, गंभीर तथा परिश्रमी जैसे गुणों का होना आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न 19.4

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. आपकी जीविका के चुनाव का आधार _____ होना चाहिए।

ii. स्वरोजगार में सफल होने के लिए एक व्यक्ति में _____ होना चाहिए।

iii. एक व्यवसायी के रूप में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यवसाय का _____ होना आवश्यक है।

iv. स्वरोजगार में _____ का पता लगाने के लिए लेखांकन का ज्ञान होना आवश्यक है।

v. उद्यमता की गुणवत्ता का सम्बन्ध _____ और _____ से है।

vi. स्वरोजगार उन्हें अजीविका अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है, जो कि _____ प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

vii. आप का जीवनवृति का चुनाव _____, _____ और _____ पर आधारित होना चाहिए।

viii. आप अपनी क्षमता/गुणवत्ता एवं _____ के सम्बन्ध में सोचना प्रारम्भ कर सकते हैं।

ix. उस कार्य का चुनाव न करे जिसमें आपकी _____ न हो।

x. सम्प्रेषण में निपुण होना आज की दुनिया में सभी पदों के लिए _____ है।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. सवेतन का अर्थ है :

क) अन्य व्यक्ति को वेतन या मजदूरी के लिए सेवा प्रदान करना

ख) व्यवसाय करना

ग) अपने आप को किसी आर्थिक क्रिया में व्यस्त करना

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

ii. स्वरोजगार का अर्थ है :

क) नियोक्ता तथा नौकर के मध्य एक अनुबंध है

ख) अन्य व्यक्ति को वेतन या मजदूरी के लिए सेवा प्रदान करना

ग) अपने आप को किसी आर्थिक क्रिया में व्यस्त करना

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

iii. निम्न में से कौन सा गुण स्वरोजगार के लिए आवश्यक नहीं है :

क) औपचारिक शिक्षा

ख) जागरूकता तथा दूरदर्शिता

ग) व्यवसाय के बारे में ज्ञान

घ) ऋणीधन से सम्बन्धित कानून

iv. जीविकोपार्जन के रास्ते का अर्थ है :
क) अलग-अलग पदों पर कार्य करना
ख) जीविका के लिए अपनाया गया रास्ता
ग) पेशेवर डिग्री प्राप्त करना
घ) कार्य की उपाधि प्राप्त करना

v. जीविका नियोजन में सम्मिलत हैं :
क) अपना व्यवसाय आरंभ करना
ख) जीविका के सकारात्मक व नकारात्मक पहलूओं के बारे में सोचना
ग) नौकरी करना
घ) जीविका के साथ समझौता करना

आपने क्या सीखा

- जीविका का अर्थ है एक व्यवसाय जिसके द्वारा जीवन में प्रगति एवं उन्नति के अवसरों का लाभ उठाया जा सकता है। सही जीवन वृत्ति का चयन जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।
- जीविका के चयन में दो विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना है। ये हैं : नौकरी एवं स्वरोजगार।
- नौकरी का तात्पर्य है मजदूरी अथवा वेतन के बदले में किसी दूसरे व्यक्ति की सेवा में कार्य करना। स्वरोजगार का अर्थ है किसी व्यक्ति का अपने जीविकोपार्जन के लिए स्वयं किसी आर्थिक गतिविधियों में लिप्त होना।
- सवेतन रोजगार के मार्ग में निम्न स्तर पर लिपिकीय अथवा तकनीकी नौकरी शामिल है।
- जिन क्षेत्रों में स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर हैं, वे हैं - छोटे स्तर के फुटकर व्यापार, मूल्य के बदले सेवा प्रदान करना, छोटे पैमाने पर कृषि कार्य, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग, कला एवं शिल्प आदि।
- यदि स्वरोजगार को जीविका के लिए अपनाना है तो व्यक्ति के अन्दर बौद्धिक योग्यता, सचेत रहना एवं दूर-दृष्टि का होना, आत्मविश्वास, व्यवसाय का ज्ञान, सम्बन्धित कानूनों का ज्ञान एवं लेखाकार्य का ज्ञान।

पाठांत प्रश्न

1. नौकरी एवं स्वरोजगार का क्या अर्थ है ?
2. जीविका को परिभाषित कीजिए।
3. जीविका चुनाव का क्या महत्व है?
4. व्यवसाय में नौकरी के कौन-कौन से अवसर हैं संक्षेप में समझाइए।

5. बेरोजगारी के संदर्भ में स्वरोजगार के महत्व का वर्णन कीजिए।
6. स्वरोजगार किस प्रकार से बड़े स्तर के उद्योगों का विकल्प है ?
7. स्वरोजगार में सफलता के लिए किन्हीं चार योग्यताओं का वर्णन कीजिए।
8. लिपिक के कार्य की आवश्यक निपुणताओं को समझाइए।
9. लेखाकार्य के लिए कौन से कौशल की आवश्यकता है?
10. स्वरोजगार के प्रेरणादायक तत्वों की पहचान कीजिए।
11. स्वरोजगार एवं वेतनवृत्ति/नौकरी में तुलना कीजिए।
12. उन सम्भावित क्षेत्रों की गणना कीजिए जिनमें कोई व्यक्ति स्वरोजगार में लगा होता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) आर्थिक

19.2 (i) आर्थिक (ii) लिपिक सम्बन्धी (iii) क्रय (iv) कार्यालयी मशीन (v)भाषा

19.3 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) असत्य

19.4 **I.** (i) योग्यता एवं रूचि (ii) आत्मविश्वास (iii) ज्ञान
(iv) लाभ या हानि (v) नव प्रवर्तन और रचनात्मक
(vi) उच्च शिक्षा (vii) योग्यता, रूचि और अभिरूचि
(viii) कमजोरी (ix) रूचि (x) आवश्यक

II. (i) क (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) ख

आपके लिए क्रियाकलाप

- किसी एक सप्ताह का 'रोजगार समाचार' लें अथवा अन्य कोई समाचार पत्र लें। उसमें से अपनी रूचि, योग्यता, एवं अभिरूचि के अनुरूप रिक्त पदों की सूची बनाएं।